

गीत सांवन के (२००)

हरयाली अब आ गई सजनी गीत सांवण के गाले॥

रिमि झिमि रिमि झिमि बूंदें बरसें छाई अजबु बहारी
सुख निवास साकेत निकुंज में झूलें साई सुखकारी
अमड़ि झुलावें प्रेम उमंग सों महबत में मतवारी॥

मलय चन्दन का बना हिण्डोला रेशम की है डोरी
साई झुलावें प्रेम उमंग सां श्री गौलोक जी जोड़ी
गावत राग मल्हार मगन होय ताल देत बनवारी॥

सारी धरती अब हरी धूप से होय रही हरियाली
त्यों भाग भरे भक्तों की दिलि वसें श्याम सुन्दर बन माली
बाहर भीतर श्याम ही श्याम है बीचि लालन की लाली॥

रिषी मुनी सभु पीर पैगम्बर गावें गुणनि की माला
सुख देवी सुकुमार साजनवा बख्त तेरा है बाला
देव मुनी सब द्वारे तुम्हारे निश दिन प्रेम सवाली॥

रोचल सन्त के राज कुंअर पै बलहारी जिन्दु सारी
प्रेम भक्ति जिनि प्रघट कीनी हिन्दु सिंधु में हाकारी
निष्काम नींह की नृमल साहिब दिखलाई चाल निराली॥

फूल महल में फूलों का झूला फूल रही फुलवाड़ी

फूलों से कोमल साईं झूले फूल वर्षाए सुर नारी
सति संग सरिता बहि रही है सजनी बीच राजत विसुवाली॥

श्री अखण्डानन्द साईं को झुलावें अखण्डानन्द को साईं
अखण्ड आनन्द अब बरस रहो है रहे अखण्ड सदाई
अमड़ि सुहागु अखण्ड निरन्तर गरीबि श्रीखण्डि खुशहाली॥